1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

स नो रास्व सुवीर्यम् ! अथर्ववेद 20/108/3

हे शक्तिदाता प्रभो ! आप हमें वीरता प्रदान करें।

O ! the Bostower of power Lord ! Bestow valour on us.

वर्ष 38, अंक 24 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 अप्रैल, 2015 से रविवार 03 मई, 2015
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

प्रकृति की महाविनाश लीला से कांपा नेपाल

''नेपाल केन्द्रीय आर्य समाज में भूकम्प से पीड़ित लोगों के लिए राहत सेवा केंद्र स्थापित''

तत्काल राहत व पुनर्वास के कार्य में सहयोग देना मकसद रहेगा

''नेपाल आर्य समाज की ओर से राहत सेवा कार्य आरंभ''

पीड़ितों की सहायता करना मानव का प्रथम कर्त्तव्य है: आचार्य बलदेव

आपदा ने जहां नेपाल में जन-धन की बड़ी हानि की है। वहां चीन भारत और बंग्लादेश में भी इसका कुछ असर रहा है। वास्तव में भूकम्प का केंद्र नेपाल ही रहा जहां बड़े क्षेत्र में जान-माल की बड़ी संख्या में हानि हुई है। राष्ट्रीय जांच एजेन्सियों द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि 4000 से भी

आपद् सेवा कार्यों में सहयोग हेतु आगे आएं आर्यजन: प्रकाश आर्य, मंत्री, (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा)

अधिक लोगों के मरने की आशंका है जिसमें राहत कार्य सैनिक स्तर पर चल रहा है। 25 अप्रैल 2015 को मध्याह्न 11.45 बजे 7.9 की तीव्रता से आए विनाशकारी भूकम्प ने नेपाल में सबसे अधिक जन-धन की हानि पहुंचाई है। इस दुखद समाचार के पता चलते ही जहां कुछ एनजीओ सक्रिय हुए वहीं, भारत सरकार ने राहत सेवा कार्यों की पहल करते हुए नेपाल में राहत कार्यों में सहयोग ही नहीं किया अपितु सैनिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने टीम भेजी

सहायता भी नेपाल में उपलब्ध कराई। इसी परिप्रेक्ष्य में आर्य समाज नेपाल में तत्काल राहत सेवा कार्यों में सहयोग देने हेतु एक आकस्मिक बैठक केन्द्रीय कार्यालय आर्य समाज नेपाल के सभागार में संपन्न हुई जिसमें सर्व श्री आर्य समाज नेपाल के अध्यक्ष श्री कमलकांत आत्रेय जी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री लेखनाथ अधिकारी, उपाध्यक्ष श्री लोकचंद्र अमात्य जी वरिष्ठ सदस्य श्री माधव प्रसाद उपाध्याय जी, श्री तारानाथ मैनाली जी, कार्यालय सचिव श्री कृष्ण खतियोडा जी तथा आर्य समाज में उपस्थित छात्र श्री राजकुमार मंडल जी उपस्थित रहे। नेपाल आर्य समाज केन्द्रीय कार्यालय पुराना बालेश्वर हाईट्स टंकप्रसाद मार्ग काठमांडू में संपन्न बैठक में निर्णय लिया गया कि आर्य समाज नेपाल, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के साथ मिलकर राहत सेवा कार्य में सलंग्न रहेगा जिसमें सिंधुपाल चौक जिले में अति क्षतिग्रस्त क्षेत्र में पीड़ितों की सेवा करने का निश्चय किया गया। आर्य जन सिंधुपाल चौक पहुंचकर, पीड़ित व्यक्तियों को, दैनिक जीवन की आवश्यक वस्तुएं, भोजन जिसमें, चावल-चूड़ा, चाउ-चाउ, बिस्कुट, दाल, चीनी, नमक तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं जैसे बर्तन,

4000 से अधिक लोगों के मरने की आशंका

लैम्प, टार्च, कम्बल, दरी एवं अन्य पहनने योग्य रेडिमेट वस्त्र पीड़ितों को प्रदान करेंगे। सार्वदेशिक आर्य प्रति. निधि सभा के अधिकारियों ने नेपाल में आए विनाशकारी भूकम्प को महात्रासदी काल समझते हुए आपात्कालीन बैठक बुलाई। सभा के अध्यक्ष आचार्य बलदेव जी ने 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया' की

वर्तमान में भूकम्प के रूप आई दैवीय

अवधारणा को चरित्रार्थ करते हुए इस

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा नेपाल केन्द्रीय आर्य समाज के सहयोग से भूकंप राहत कार्य प्रारंभ

आपात् काल में पीड़ितों की सहायता एवं सेवा को आर्यजन सभा का प्रथम कर्त्तव्य बताते हुए एक चार सदस्यीय समिति का गठन किया गया तथा इस समिति को नेपाल भूकम्प त्रासदी कार्य में भाग लेने तथा पीड़ितों की सेवा करने के लिए कार्य के संचालन की व्यवस्था हेतु तुरंत नेपाल रवाना होने के निर्देश दिए। यह चार सदस्यीय समिति जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री सुखबीर सिंह एवं आर्य केन्द्रीय सभा के मंत्री श्री एसपी सिंह जी तथा आर्य

भारत सरकार ने पहुंचाई तुरंत राहत सामग्री एवं सैनिक सहायता

समाज सेवा समिति के सदस्य श्री रणधीर आर्य एवं श्री विजेंद्र आर्य 29 अप्रैल की प्रात: नेपाल पुराना बालेश्वर हाईट्स

...शेष पृष्ठ 5 पर

For Details :- http://aryasamaj.com/

ओ३म्
।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - Make the universe noble ।।

Silver 25 Years Jubilee
Arya Mahasammelan
ARYA PRATINIDHI SABHA AMERICA
Congress of Arya Samajs in North America - Established in 1991
Cordially invites you to
International Arya Mahasammelan
A unique gathering of Vedic Scholars, missionaries and volunteers from around the world
on
30th July – 2nd August 2015
Hosted by
Arya Samaj Greater Houston
14375 Schiller Road, Houston, TX 77082
Arya Samaj movement in North America

वेद-स्वाध्याय

वृद्धों का लाठी परमेश्वर

आ त्वा रम्भं न जिव्रयो ररम्भा शवसस्पते।
उश्मसि त्वा सधस्थ आ।। -ऋ0 8/45/20
ऋषिः-**त्रिशोकः काण्वः।।** देवता-**इंद्रः।।**
छन्दः-**गायत्री।।**

शब्दार्थ-शवसः पते- हे सब बलों के स्वामिन्! **जिव्रय**- बुड्ढा पुरूष **रम्भं न**- जेसे डंडे को **त्वा**-उस प्रकार तेरा मैंने **ररम्भ**-अवलम्बन कर लिया है और अब मैं **त्वा**-तुझे **सधस्थे**-अपने समान स्थान में **आ**-आमने-सामने-आंखों के सामने **उश्मसि**-चाहता हूं- देखना चाहता हूं।

विनयः- हे भगवन्! मैं बुड्डा हूं और तुम मेरी लाठी हो। तुम मेरे सहारे हो। मेरा इस जन्म का यह देह चाहे वृद्ध न दीखता हो, परंतु मैं सच्चे अर्थ में जीर्ण हूं, पुराना हूं, अतएव अनुभवी हूं। मैं न जाने कितनी योनियों में फिरा हूं-सब संसार भोग चुका हूं परंतु अब मैं तुम्हें शवसस्पते करके सम्बोधन करता हूं, क्योंकि मैंने सुदीर्घ अनुभव से जान लिया है कि सब बलों के स्वामी तुम्हीं हो। मैंने कभी बड़ा धनाढ्य होकर धनबल का अभिमान किया है, किसी समय यह समझा है कि मेरे साथ इतना बड़ा दल है, अतः जो मैं चाहूं कर सकता हूं। इस प्रकार दलबंदी के बल को भी आजमाया है। कभी अपने बुद्धि-बल, चतुराई-बल के मुकाबले में सब संसार को तुच्छ समझा है। शरीर-बलों और शस्त्र-बलों का तो कहना ही क्या है! पर इतने लम्बे, अनगिनत योनियों के सुदीर्घ अनुभवों के बाद जीर्ण होकर-पुराना होकर अब समझा है कि सब बलों के स्वामी तो तुम हो। इसलिए अब और सब बलों का सहारा छोड़कर एक तुम्हारा सहारा पकड़ लिया है। हे मेरे एकमात्र बल! तुम मुझसे अब क्षणभर के लिए भी दूर मत होओ। अब यदि मैं क्षणभर के लिए भी तुमको भूल जाता हूं- अपने मानसिक विचार-नेत्र के सामने से क्षणभर के लिए भी तुम्हें ओझल पाता हूं , तो मैं व्याकुल हो जाता हूं- एकदम निस्सहाय हो जाता हूं, अतः अब तो सतत यही कामना है कि तुम सदा ही मेरे सामने और मेरे साथ ही बने रहो। बुड्ढे की लाठी जब आंखों के सामने पड़ी हो, पर उसकी पहुंच के परे पड़ी हो, तब तो उसका सहारा न पा सकते हुए उसका दीखना बुड्ढे के लिए और भी दुखदायक हो जाता है। इसलिए हे मुझ वृद्ध की लाठी! हे मुझ निर्बल के बल! हे मेरे एक मात्र सहारे तुम अब सदा मेरे साथ रहो सधस्थ बने रहो। तुमसे तनिक भी दूर होकर अब मैं नहीं रह सकता। **-वैदिक विनय**

प्रेरक प्रसंग

मन घड़न्त गायत्री

पूज्य स्वामी स्वतन्त्रतानन्दजी महाराज अपने व्याख्यानों में अविद्या की चर्चा करते हुए निम्न घटना सुनाया करते थे। रोहतक जिला के रोहणा ग्राम में एक बड़े कर्मठ आर्य पुरुष हुए हैं। उनका नाम था मास्टर अमरसिंह जी। वे कुछ समय पटवारी भी रहे। किसी ने स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज को बताया कि मास्टर जी को एक ऐसा गायत्री मंत्र आता है जो वेद के विख्यात् गायत्री मन्त्र से न्यारा है। स्वामीजी महाराज गवेषक थे ही। हरियाणा की प्रचार यात्रा करते हुए जा मिले मास्टर अमरसिंह जी से।

मास्टर जी से निराला 'गायत्रीमंत्र' पूछा तो मास्टर जी ने बताया कि उनकी माता जी भूतों से बड़ा डरती थी। माता का संस्कार बच्चे पर भी पड़ा। बालक को भूतों का भय बड़ा तङ्ग करता था। इस भयरूपी दुःख से मुक्त होने के लिए बालक अमरसिंह सबसे पूछता रहता था कि कोई उपाय उसे बताया जाए। किसी ने उसे कहा कि इस दुःख से बचने का एकमात्र उपाय गायत्रीमंत्र है। पंडितों को यह मंत्र आता है।

मास्टरजी तब खरखोदा मिडिल स्कूल में पढ़ते थे। वहाँ एक ब्राह्मण अध्यापक था। बालक ने अपनी व्यथा की कथा अपने अध्यापक को सुनाकर उनसे गायत्रीमंत्र बताने की विनय की। ब्राह्मण अध्यापक ने कहा कि तुम जाट हो, इसलिए तम्हें गायत्री मन्त्र नहीं सिखाया जा सकता। बहुत आग्रह किया तो अध्यापक ने कहा कि छह मास हमारे घर में हमारी सेवा करो फिर गायत्री सिखा दूँगा। बालक ने प्रसन्नतापूर्वक यह शर्त मान ली। छह मास, जी भरकर पंडित जी की सेवा की । जब छह मास बीत गये तो अमरसिंह ने गायत्री सिखाने के लिए पंडित से प्रार्थना की। पंडितजी का कठोर हृदय अभी भी न पिघला। कुछ समय पश्चात् फिर अुननय-विनय की। पंडितजी की धर्मपत्नी ने भी बालक का पक्ष लिया तो पंडित जी ने कहा अच्छा पाँच रुपये दक्षिणा दो फिर सिखाएंगे। बालक निर्धन था। उस युग के पांच रुपए का मूल्य भी आज के पाँच सौ से अधिक होगा। बालक कुछ झूठ बोलकर कुछ रूठकर लड़-झगड़कर घर से पाँच रुपये ले-आया। रुपये लेकर अगले दिन पंडितजी ने गायत्री की दीक्षा दी। उनका 'गायत्रीमन्त्र' इस प्रकार था-

'राम कृष्ण बलदेव दामोदर श्रीमाधव मधुसूदरना।
काली-मर्दन कंस-निकन्दन देवकी-नन्दन तव शरना।
ऐते नाम जपे निज मूला जन्म-जन्म के दुःख हरना।'

बहुत समय पश्चात् आर्य पंडित श्री शम्भूदत्त जी तथा पंडित बालमुकन्द जी रोहणा ग्राम में प्रचारार्थ आये तो आपने घोषणा की कि यदि कोई ब्राह्मण गायत्री सुनाये तो एक रुपया पुरस्कार देंगे, बनिए को दो, जाट को तीन और अन्य कोई सुनाए तो चार रुपये देंगे। बालक अमरसिंह उठकर बोला गायत्री तो आती है, परंतु गुरु की आज्ञा है किसी को सुनानी नहीं। पंडित शम्भूदत्त जी ने कहा सुनादे, जो पाप होगा मुझे ही होगा। बालक ने अपनी 'गायत्री' सुना दी।

बालक को आर्योपदेशक ने चार रुपये दिये और कुछ नहीं कहा। बालक ने घर जाकर सारी कहानी सुना दी। अमरसिंह जी की माता ने पंडितों को भोजन का निमंत्रण भेजा जो स्वीकार हुआ। भोजन के पश्चात् चार रुपये में एक और मिलाकर उसने पाँच रुपये पंडितों को यह कहकर भेंट किये कि हम जाट हैं। ब्रह्मणों का दिया नहीं लिया करते । तब आर्यप्रचारकों ने बालक अमरसिंह को बताया कि जो तू रटे हुए है, वह गायत्री नहीं, हिन्दी का एक दोहा है। इस मनघड़न्त गायत्री से अमरसिंह का पिण्ड छूटा। प्रभु की पावन वाणी का बोध हुआ। सच्चे गायत्रीमंत्र का अमरसिंह जी ने जाप आरंभ किया। अविद्या का जाल तार-तार हुआ। ऋषि दयानन्द की कृपा से एक जाट बालक को आगे चलकर वैदिक धर्म का एक प्रचारक बनने का गौरव प्राप्त हुआ। केरल में भी एक ऐसी घटना घटी। प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य नरेन्द्र भूषण जी विवाह होने तक एक ब्राह्मण द्वारा रटाये जाली गायत्रीमंत्र का वर्षो पाठ करते रहे।

साभार- तड़प वाले तड़पाती जिनकी कहानी

संपूर्ण परिवार ने लिया देह दान का संकल्प

वेद ने मनुष्य को जीवन में त्यागपूर्वक भोग करने का सन्देश दिया है। संसार में दान और दानियों की बड़ी महिमाएँ गाई जाती हैं। देह/ शरीर के अंगा. का दान भी आज के समय की पुकार है और एक साहसिक कार्य है जो प्रेरणा देने वाला है, जिसे भाटिया परिवार ने किया। स्व. श्री फकीर चन्द जी भाटिया और धर्मपत्नी विदुषी स्व. सुहागवन्ती जी भाटिया (आफ बाबा गुलुशाह जी की मंडी के नाम से मशहुर गांव कोरेकी, तहसील पसरुर, ज़िला स्यालकोट, पाकिस्तान)ने परिवार जो भारत विभाजन के समय पंजाब में पहले तहसील गढ़शंकर (ज़िला होशियारपुर) और फिर जालन्धर शहर में आकर बस गए थे, अपने परिवार को ऐसे सुसंस्कारों से अलंकृत किया कि उनके चारों सुपुत्रों और चारों सुपुत्रियों ने यानी आठों सन्तानों ने एक स्वर में अपने देह दान का शुभसंकल्प लेकर अपने आप में विश्व में शायद एक अनोखी नेक कार्य की मशाल जलाकर मिसाल कायम कर दिखाई है। परिवार के सदस्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

1. श्री - कृष्ण कुमार भाटिया, आयु 86 वर्ष (स्वतंत्रता सैनानी, विद्वान्, समाज सुधारक एवं सीनियर ओफिसर, सी.आर. आर. आई., दिल्ली) निवासी हरिनगर, नई दिल्ली

2. श्रीमती दर्शना भाटिया - 82 वर्ष, समाजसेवी समर्पित महिला, ज़ीरकपुर, चण्डीगढ़

3. श्रीमती वेद कुमारी भाटिया - 80 वर्ष, समाजस.वी एवं घरेलु चिकित्सा परामर्श दाता

4. श्री धर्मवीर भाटिया - 78 वर्ष, सेवानिवृत एल. आई.सी. ओफिसर, मृदु भाषी, (ऑनेस्ट मैन ऑफ द आफिस)

माडल टाउन, जालंधर के प्रतिष्ठित,'फ्लावर पोइन्ट' और 'एक्सक्लूसिव फ्लावर पोंइट' के मालिक

5. श्री बी. डी. भाटिया - 75 वर्ष, सेवा निवृत राजपत्रित अधिकारी, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार, हरिनगर, नई दिल्ली- 110064

6. श्रीमती प्रेम कुमारी - 72 वर्ष , सेवा निवृत अध्यपिका एवं हास्य कला प्रवीन देवी, चंडीगढ़

7. श्रीमती विजय कुमारी - 69 वर्ष, मृदु भाषी समाज सेवी

पीतम पुरा, दिल्ली

8. श्री सुशील भटिया - 66 वर्ष, महान समाज सेवी एवं प्रेरक और ''पंजाब, चंडीगढ़ के खूबसूरत फ्लोरिस्ट'' के नाम से जाने माने

आओ हम भी ऐसे महानुभावों से प्रेरणा लेकर समाज सेवा के कार्यो में सहायक बनें।

गुलशन भाटिया
मो. 9810279127, 9818009131

कब्र पूजा: मूर्खता अथवा अंधविश्वास

यह सार्वभौमिक सत्य है कि सृष्टि का निर्माण ईश्वर ने किया है। इस विषय में संसार के महान विचारक एक मत हैं। सृष्टि के विषय में चिंतन पर यह भी निश्चय किया जा सकता है कि इसका रचयिता एक है क्योंकि इसमें कहीं पर भी किसी भी प्रकार से यह मतभिन्नता नहीं है। कि अमुक राष्ट्र, क्षेत्र वा भूखंड किसी अन्य की रचना है। सारा संसार एक मत है कि विश्व का सबसे पुराना अथवा प्रथम ग्रंथ वेद है, अत: इससे यह स्वत: प्रमाण है कि वेद ईश्वर की वाणी है। वेद में व्यवहार (आचरण) की उत्तम बनाने की शिक्षा है। उसमें कहीं पर भी अनाचार, पाखंड तथा मूर्ति पूजा (जड़ पूजा) आदि का उल्लेख नहीं है। परंतु आज वेद मार्ग से हटकर अनेक मत मतांतर संसार में फैल रहे हैं जिनमें अंधविश्वास, पाखंड एवं अनाचारों का प्रचल हो रहा है, जो हमारे दुख का सबसे बड़ा कारण है। आज हम विचारें कि यदि हम वेद मार्ग का अनुसरण करते है तो पाखंड, अंधविश्वास, अज्ञान से तो छुटकारा मिलता ही है व्यक्ति दुखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त करता है। इसी उद्देश्य हेतु यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है कि मानव सृष्टि विज्ञान को समझे, पाखण्ड अन्धविश्वास अज्ञान को त्याग सत्यमार्ग का अनुसरण करें, जो प्राणी मात्र के लिए अभिष्ट है।

-सम्पादक

आज के समाचार पत्रों में देश के प्रधानमंत्री मोदी जी द्वारा अजमेर में दरगाह शरीफ पर चादर चढ़ाने के लिए बीजेपी के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी को अजमेर भेजने एवं उसके साथ अपना पैगाम भेजने का समाचार छपा है। पूर्व में भी बॉलीवुड का कोई प्रसिद्ध अभिनेता अभिनेत्री अथवा क्रिकेट के खिलाड़ी अथवा राजनेता चादर चढ़ाकर अपनी फिल्म को सुपर हिट करने की अथवा आने वाले मैच में जीत की अथवा आने वाले चुनावों में जीत की दुआ मांगता रहा हैं। भारत की नामी गिरामी हस्तियों के दुआ मांगने से साधारण जनमानस में एक भेड़चाल सी आरंभ हो गयी है कि अजमेर में दुआ मांगने से बरकत हो जाएगी, किसी की नौकरी लग जाएगी, किसी के यहाँ पर लड़का पैदा हो जायेगा , किसी का कारोबार नहीं चल रहा हो तो वह चल जायेगा, किसी का विवाह नहीं हो रहा हो तो वह हो जायेगा।

कुछ सवाल हमें अपने दिमाग पर जोर डालने को मजबूर कर रहे हैं जैसे कि यह गरीब नवाज कौन थे ?कहाँ से आये थे? इन्होंने हिंदुस्तान में क्या किया और इनकी कब्र पर चादर चदाने से हमें सफलता कैसे प्राप्त होती है?

गरीब नवाज भारत में लूटपाट करने वाले , हिन्दू मंदिरों का विध्वंश करने वाले ,भारत के अंतिम हिन्दू राजा पृथ्वी राज चौहान को हराने वाले व जबरदस्ती इस्लाम में धर्म परिवर्तन करने वाले मुहम्मद गौरी के साथ भारत में शांति का पैगाम लेकर आये थे। पहले वे दिल्ली के पास आकर रुके फिर अजमेर जाते हुए उन्होंने करीब 700 हिन्दुओं को इस्लाम में दीक्षित किया और अजमेर में वे जिस स्थान पर रुके उस स्थान पर तत्कालीन हिन्दू राजा पृथ्वी राज चौहान का राज्य था। ख्वाजा के बारे में चमत्कारों की अनेकों कहानियां प्रसिद्ध है कि जब राजा पृथ्वी राज के सैनिकों ने ख्वाजा के वहां पर रुकने का विरोध किया क्योंकि वह स्थान राज्य सेना के ऊँटो को रखने का था तो पहले तो ख्वाजा ने मना कर दिया फिर क्रोधित होकर शाप दे दिया कि जाओ तुम्हारा कोई भी ऊंट वापिस उठ नहीं सकेगा। जब राजा के कर्मचारियों ने देखा कि वास्तव में ऊंट उठ नहीं पा रहे हैं तो वे ख्वाजा से माफी मांगने आये और फिर कहीं जाकर ख्वाजा ने ऊँटों को दुरुस्त कर दिया। दूसरी कहानी अजमेर स्थित आनासागर झील की है। ख्वाजा अपने खादिमों के साथ वहां पहुंचे और उन्होंने एक गाय को मारकर उसका कबाब बनाकर खाया। कुछ खादिम पनसिला झील पर चले गए, कुछ आनासागर झील पर ही रह गए। उस समय दोनों झीलों के किनारे करीब 1000 हिन्दू मंदिर थे, हिन्दू ब्राह्मणों ने मुसलमानों के वहां पर आने का विरोध किया और ख्वाजा से शिकायत कर दी।ख्वाजा ने तब एक खादिम को सुराही भरकर पानी लाने को बोला। जैसे ही सुराही को पानी में डाला तभी दोनों झीलों का सारा पानी सूख गया। ख्वाजा फिर झील के पास गए और वहां स्थित मूर्ति को सजीव कर उससे कलमा पढ़वाया और उसका नाम सादी रख दिया। ख्वाजा के इस चमत्कार की सारे नगर में चर्चा फैल गई। पृथ्वीराज चौहान ने अपने प्रधान मंत्री जयपाल को ख्वाजा को काबू करने के लिए भेजा। मंत्री जयपाल ने अपनी सारी कोशिश कर डाली पर असफल रहा और ख्वाजा ने उसकी सारी शक्तिओं को खत्म कर दिया। राजा पृथ्वीराज चौहान सहित सभी लोग ख्वाजा से क्षमा मांगने आये। काफी लोगों ने इस्लाम कबूल किया पर पृथ्वीराज चौहान ने इस्लाम कबूलने से इंकार कर दिया। तब ख्वाजा ने की कि पृथ्वी राज को जल्द ही बंदी बना कर इस्लामिक सेना के हवाले कर दिया जायेगा। निजामुद्दीन औलिया जिसकी दरगाह दिल्ली में स्थित है ने भी ख्वाजा का स्मरण करते हुए कुछ ऐसा ही लिखा है।

बुद्धिमान पाठकगण स्वयं अंदाजा लगा सकते हैं कि इस प्रकार के करिश्मों को सुनकर कोई मूर्ख ही इन बातों पर विश्वास ला सकता है। भारत में स्थान स्थान पर स्थित कब्रें उन मुसलमानों की हैं जो भारत पर आक्रमण करने आये थे और हमारे वीर हिन्दू पूर्वजों ने उन्हें अपनी तलवारों से परलोक पंहुचा दिया था। ऐसी ही एक कब्र बहराइच गोरखपुर के निकट स्थित है। यह कब्र गाजी मियां की है। गाजी मियां का असली नाम सालार गाजी मियां था एवं उनका जन्म अजमेर में हुआ था। इस्लाम में गाजी की उपाधि किसी काफिर यानि गैर मुसलमान को कत्ल करने पर मिलती थी। गाजी मियां के मामा मुहम्मद गजनी ने ही भारत पर आक्रमण करके गुजरात स्थित प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर को विध्वंश किया था। कालांतर में गाजी मियां अपने मामा के यहाँ पर रहने के लिए गजनी चला गया। कुछ काल के बाद अपने वजीर के कहने पर गाजी मियां को मुहम्मद गजनी ने नाराज होकर देश से निकला दे दिया। उसे इस्लामिक आक्रमण का नाम देकर गाजी मियां ने भारत पर हमला कर दिया। हिन्दू मंदिरों को विध्वंश करते हुए, हजारों हिन्दुओं का कत्ल अथवा उन्हें गुलाम बनाते हुए, नारी जाति पर अमानवीय कहर बरपाते हुए गाजी मियां ने बाराबंकी में अपनी छावनी बनाई और चारों तरफ अपनी फौजें भेजी। कौन कहता है कि हिन्दू राजा कभी मिलकर नहीं रहे? मानिकपुर, बहराइच आदि के 24 हिन्दू राजाओं ने राजा सोहेल देव पासी के नेतृत्व में जून की भरी गर्मी में गाजी मियां की सेना का सामना किया और उसकी सेना का संहार कर दिया। राजा सोहेल देव ने गाजी मियां को खींच कर एक तीर मारा जिससे कि वह परलोक पहुँच गया। उसकी लाश को उठाकर एक तालाब में फेंक दिया गया। हिन्दुओं ने इस विजय से न केवल सोमनाथ मंदिर के लूटने का बदला ले लिया था बल्कि अगले 200 सालों तक किसी भी मुस्लिम आक्रमणकारी का भारत पर हमला करने का दुस्साहस नहीं हुआ। कालांतर में फिरोज शाह तुगलक ने अपनी माँ के कहने पर बहराइच स्थित सूर्य कुण्ड नामक तालाब को भरकर उस पर एक दरगाह और कब्र गाजी मियां के नाम से बनवा दी जिस पर हर जून के महीने में सालाना उर्स लगने लगा। मेले में एक कुण्ड में कुछ बहरूपिये बैठ जाते है और कुछ समय के बाद लाइलाज बीमारियों को ठीक होने का ढोंग रचते है। पूरे मेले में चारों तरफ गाजी मियां के चमत्कारों का शोर मच जाता है और उसकी जय-जयकार होने लग जाती है। हजारों की संख्या में मूर्ख हिन्दू औलाद की, दुरुस्ती की, नौकरी की, व्यापार में लाभ की दुआ गाजी मियां से मांगते हैं, शरबत बांटते हैं, चादर चदाते है और गाजी मियां की याद में कव्वाली गाते है।

कुछ सामान्य से 10 प्रश्न हम पाठको से पूछना चाहेंगे?

1 .क्या एक कब्र जिसमें मुर्दे की लाश मिट्टी में बदल चुकी है वो किसी की मनोकामना पूरी कर सकती है?

2. सभी कब्र उन मुसलमानों की है जो हमारे पूर्वजों से लड़ते हुए मारे गए थे, उनकी कब्रों पर जाकर मन्नत मांगना क्या उन वीर पूर्वजों का अपमान नहीं है जिन्होंने अपने प्राण धर्म रक्षा करते बलि वेदी पर समर्पित कर दिये थे?

3. क्या हिन्दुओं के राम, कृष्ण अथवा 33 करोड़ देवी देवता शक्तिहीन हो चुके हैं जो मुसलमानों की कब्रों पर सर पटकने के लिए जाना आवश्यक है?

4. जब गीता में भगवान श्री कृष्ण ने कहाँ हैं की कर्म करने से ही सफलता प्राप्त होती हैं तो मजारों में दुआ मांगने से क्या हासिल होगा?

5. भला किसी मुस्लिम देश में वीर शिवाजी, महाराणा प्रताप, हरी सिंह नलवा आदि वीरों की स्मृति में कोई स्मारक आदि बनाकर उन्हें पूजा जाता है तो भला हमारे ही देश पर आक्रमण करने वालों की कब्र पर हम क्यों शीश झुकाते है?

6. क्या संसार में इससे बड़ी मूर्खता का प्रमाण आपको मिल सकता है?

7. हिन्दू जाति कौन सी ऐसी अध्यात्मिक प्रगति मुसलमानों की कब्रों की पूजा कर प्राप्त कर रही है जिसका वर्णन पहले से ही हमारे वेदों-उपनिषदों आदि में नहीं है?

8. कब्र पूजा को हिन्दू मुस्लिम एकता की मिसाल और सेकुलरता की निशानी बताना हिन्दुओं को अँधेरे में रखने के समान नहीं है तो और क्या है?

9. इतिहास की पुस्तकों में गौरी गजनी का नाम तो आता हैं जिन्होंने हिन्दुओं को हरा दिया था पर मुसलमानों को हराने वाले राजा सोहेल देव पासी का नाम तक न मिलना क्या हिन्दुओं की सदा पराजय हुई थी ऐसी मानसिकता को बना कर उनमें आत्मविश्वास और स्वाभिमान की भावना को कम करने के समान नहीं है?

10. क्या हिन्दू फिर एक बार 24 हिन्दू राजाओं की भांति मिल कर संगठित होकर देश पर आये संकट जैसे कि आंतकवाद, जबरन धर्म परिवर्तन, नक्सलवाद, लव जिहाद, बंगलादेशी मुसलमानों की घुसपैठ आदि का मुंहतोड़ जवाब नहीं दे सकते?

आशा है इस लेख को पढ़ कर आपकी बुद्धि में कुछ प्रकाश हुआ होगा। अगर आप आर्य राजा राम और कृष्ण जी महाराज की संतान हैं तो तत्काल इस मूर्खता पूर्ण अंधविश्वास को छोड़ दे और अन्य हिन्दुओं को भी इस सत्य के विषय में प्रकाशित करें।

डा. विवेक आर्य

गतांक से आगे

भारत के जगद्गुरू होने का अर्थ व उपाय क्या है?

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक जी द्वारा लिखित इस लेख में भारत के जगद्गुरू होने की संभावनाओं की चर्चा की गई है, साथ ही प्राचीन काल में भारत का विश्व गुरू बने रहने की योग्यता का वर्णन भी किया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वे पुनः उस स्वप्न को साकार करने हेतु कुछ उपाय व सुझाव दे रहे है। पाठकों के संज्ञान हेतु यह लेख प्रकाशित किया जा रहा है। इस लेख का प्रथम भाग पूर्व अंक में प्रकाशित किया जा चुका है, शेष भाग इस अंक में प्रस्तुत है। **-सम्पादक**

जापान के पास एण्टी एटम बम होता तो वहाँ महाविनाश नहीं होता। आर्यो के अस्त्र शत्रु को मारकर वापिस भी आ सकते थे। प्रक्षेपण के पश्चात् योद्धा यदि चाहता तो वापस भी लौटा सकता था, आज यह तकनीक किस देश के पास है? हम रामायण व महाभारत में कहीं यह भी नहीं पढ़ते कि इन विशाल युद्धों के पश्चात् पर्यावरण का प्रदूषण होकर कोई महामारी या प्राकृतिक प्रकोप फैला हो। कौन सी टैक्नोलोजी थी कि महाविध्वंसकारी अस्त्रों के प्रयोग से लाखों जान जाने पर भी पर्यावरण पर कोई प्रभाव नहीं होता था। आकाश गमन करना, रूप बदलना, अदृश्य होना, लघु व विशाल रूप धारण करना, आदि जैसी सिद्धियों का होना कुछ समाजों में विशेषकर देवों, गन्धर्वो, असुरों, वानरों में साधारण बात थी। महर्षि पतंजलि के योगसूत्रों व उनके महर्षि व्यास भाष्य से इनका वैज्ञानिक आधार परिलक्षित होता है, कोई इन्हें गम्भीरता से पढ़ने का यत्न तो करे। आज योग का यथार्थ स्वरूप कहीं लेशमात्र भी दिखायी नहीं देता। उस समय अध्यात्म व पदार्थ विज्ञान दोनों ही उत्कर्ष पर थे, तब यह अब हम विचार करते हैं कि इस सबका मूल कारण क्या था? वस्तुतः हर देश व समाज को उत्कर्ष वा अपकर्ष तक पहुंचाने में सबसे बड़ा योगदान शिक्षा प्रणाली का ही होता है। उस समय सभी प्रकार का सदाचार ज्ञान, विज्ञान व तकनीक वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, दर्शन, उपनिषदों से ही उत्पन्न थी। ऋषि भगवन्त साधना के द्वारा सृष्टि के सूक्ष्म रहस्यों तथा ब्रह्माण्ड में विचरती वेद की ऋचाओं के रहस्यों को प्रकट करके उन्हें प्रयोगात्मक रूप देकर नाना प्रकार की दिव्य तकनीक को जन्म देते थे। वे जहाँ उच्च कोटि के योगी, तपस्वी हुआ करते थे, वहीं वे अनेक शस्त्रास्त्र व विमान विद्या में पारंगत होकर राष्ट्र व विश्व की सम्पूर्ण परिस्थिति पर सूक्ष्म दृष्टि रखकर क्षत्रियों को पूर्ण मार्गदर्शन व शस्त्रास्त्र प्रदान करते थे। उस समय वेदादि शास्त्रों को समझने की जो परम्परा थी, वह महाभारत के पश्चात् मानो लुप्त हो गयी और धीरे-2 वेदार्थ करने की परम्परा के स्थान पर केवल वेदपाठ मात्र आजीविका का साधन बन गया। हाँ, यह भी बात सत्य है कि वेदपाठियों ने भी वेद को अब तक सुरक्षित रखा, इसलिए सम्पूर्ण मानवजाति उनकी भी ऋणी है। वेद, ब्राह्मणग्रन्थ, अरण्यकग्रन्थ आज भी इस देश में विद्यमान हैं परन्तु इनको समझने की परम्परा लुप्त हो जाने से कोई विद्वान् भाष्यकार प्राचीन विषयों के ज्ञान विज्ञान व तकनीक को संकेत मात्र भी जान नहीं पाया है। वेद भाष्यकारों में केवल महर्षि दयानन्द सरस्वती ही ऐसे दिखायी देते हैं जिन्होंने महाभारत के बाद लुप्त वेदार्थ की परम्परा को समझा परन्तु समयाभाव के कारण वे अपना वेदभाष्य सांकेतिक ही कर सके। उन्होंने अपने सत्यार्थ प्रकाश में न केवल आर्यावर्त भारतवर्ष के वर्तमान पतन के साथ प्राचीन ऐश्वर्य का वर्णन किया है अपितु वैदिक आर्य विद्या का ऐसा पाठ्यक्रम भी प्रस्तुत किया है, जिसके आधार पर भारत पुनः सच्चा जगद्गुरु व चक्रवर्ती राष्ट्र बन सके परन्तु दुर्भाग्य यह है कि इस पाठ्यक्रम को न तो पढ़ने वाले रहे, न पढ़ाने वाले और न ही इन शास्त्रों के गूढ़ रहस्य को समझने समझाने की वह वैज्ञानिक पद्धति, आत्मसाधना व तप ही रहे जो इन शास्त्रों को समझ कर विश्व के आधुनिक विज्ञान की चकाचौंध को अपने वैज्ञानिक उत्कर्ष से प्रभावित व मार्गदर्शित कर सके। कहीं-2 कुछ गुरुकुलों में कुछ ग्रन्थों का पठन-पाठन चल रहा है परन्तु प्रतीत होता है कि इस परम्परा का बाह्य आवरण मात्र शेष है, अन्दर से नितान्त रिक्तता है, अन्यथा वेदविद्या विज्ञान आज कुछ तो करके दिखाता। इस अभागे हिन्दू समाज ने तो वेद के स्थान पर केवल गीता वह भी पाठमात्र, वाल्मीकि रामायण के स्थान पर रामचरित मानस, सच्चे पुराण शतपथ-ऐतरेय आदि ब्राह्मण ग्रन्थों के स्थान पर भागवत आदि नवीन पुराणों को ही अपने धर्म व विद्या के ग्रन्थ मान लिया। उस पर पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली, खानपान, वेषभूषा, जीवनशैली का ऐसा रोग लगा कि स्वदेशीय स्वाभिमान, धर्म, संस्कृति एवं विद्या सब भस्म हो चुके हैं। तब माननीय प्रधानमंत्री जी! कैसे जगद्गुरु बनायेंगे, आप इस देश को?

अस्तु, महर्षि दयानन्द के पाश्चात् आर्य समाज के एक विद्वान् पं. भगवद्दत्त रिसर्च स्कॉलर ने वैदिक विज्ञान की परम्परा को समझने का प्रयास किया और अपने साहित्य में कुछ संकेत भी दिये। यदि इन दोनों विद्वानों को छोड़ दें तो आचार्य सायणादि के वेद भाष्य के आधार पर कोई प्राचीन वैदिक ज्ञान विज्ञान जानकर भारत को जगद्गुरु बनाने का स्वप्न देखता है, तो वह दिवास्वप्न ही होगा। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि इन भाष्यकारों ने वैदिक ज्ञान विज्ञान का विनाश कर के पशुबलि, हिंसा, यौन अपराध, मांसाहार आदि को इस संसार में फैलाने में भारी योगदान दिया है। वेद एवं ब्राह्मण ग्रन्थों का विज्ञान समझना आज असम्भव सा हो गया है। महर्षि दयानन्द के कुछ काल पश्चात् जयपुर के राज पण्डित पं. मधुसूदन ओझा एवं पं. मोतीलाल शास्त्री ने ब्राह्मण ग्रन्थों पर विशाल साहित्य रचा परन्तु रहस्यमय विज्ञान के नाम पर लिखा गया, उनका सम्पूर्ण वाङ्मय विज्ञान से सर्वथा शून्य है क्योंकि पं. मोतीलाल शास्त्री ने स्वयं अपने ग्रन्थ 'दिग्देशकालस्वरूप मीमांसा' पुस्तक के पृष्ठ 437 पर आचार मीमांसा प्रकरण में लिखा है- ''वैदिक विज्ञान का आज के भूत विज्ञान से कुछ भी तो साम्य नहीं है।''यह बात तो उचित है कि वैदिक विज्ञान की परम्परा व क्षेत्र वर्तमान विज्ञान से कुछ पृथक् है परन्तु कोई भी साम्य न होना यह दर्शाता है कि ऐसा वैदिक विज्ञान न तो कभी प्रयोगात्मक हो सकता है और न ही कभी इसका ब्रह्माण्ड के विषय में हो रहे विभिन्न प्रेक्षणों व अनुसंधानों से कोई सम्बन्ध है, तब इससे कोई तकनीक विकसित करना तो सर्वथा दूर की बात है। ऐसी स्थिति में वैदिक भूत विज्ञान क्या केवल वाग्विलास की वस्तु है वा ग्रन्थों की शोभा व मिथ्या आत्म प्रशंसा, वेद प्रशंसा व भारतीय ज्ञान विज्ञान की मिथ्या कथा का साधन? तब इस कोरे कल्पित विज्ञान का मानव जीवन के लिए क्या उपयोग है? यदि वैदिक विज्ञान यही है तो उसे मानने व जानने का कोई अर्थ ही नहीं है। मेरी दृष्टि में हर विज्ञान तीन चरणों में विकसित होता है- 1. मूलभूत भौतिक विज्ञान 2. प्रयोगात्मक व प्रक्षेणात्मक विज्ञान 3. तकनीक में परिवर्तित विज्ञान। मानवजाति के प्रत्यक्ष उपयोग में आने वाला तकनीकी विज्ञान ही है परन्तु इनकी नींव मूलभूत विज्ञान ही है और तना, शाखा व पत्तियां हैं, प्रयोग व प्रेक्षण में उपयुक्त होने वाला विज्ञान। यदि कोई विद्या इन तीनों में से एक भी श्रेणी में नहीं आती है तो वह पदार्थ विद्या कहलाने योग्य ही नहीं है। इसी कारण मैंने वैदिक विज्ञान की लुप्त परम्परा को खोजने व समझने का बीड़ा उठाया है। मैं आधुनिक भौतिक विज्ञान को भी समझने का यत्न कर रहा हूँ। भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई एवं टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फण्डामेण्टल रिसर्च, मुम्बई में वर्षो से जा जाकर तथा आधुनिक भौतिक विज्ञान की उच्च स्तरीय पुस्तकों का अवलोकन करके वर्तमान भौतिक विज्ञान की समस्याओं, न्यूनताओं को जानने का प्रयास किया है। जोधपुर की रक्षा प्रयोगशाला एवं राष्ट्रिय भौतिकी प्रयोगशाला दिल्ली के निदेशक स्तर के भौतिकविदों से व्यापक चर्चा की है। सौर वेधशाला उदयपुर एवं इण्डियन सायंस एकेडमी के भौतिक विज्ञानियों की पर्याप्त संगति की है। भारत के विशेष प्रतिभाशाली सृष्टि विज्ञानी प्रो. ए.के. मित्रा, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र, मुम्बई से पिछले दस वर्षो से सतत सम्पर्क रहा है। उनके अनुसंधान व मेरे विचार कई दृष्टि से मिलते भी रहे हैं।

इस कारण वे मुझसे बहुत निकट व आशा भी रखते हैं। अन्य भी कई प्रयोग वैज्ञानिक मुझसे आश्वस्त हैं। मैंने निष्कर्ष यह निकाला है कि वर्तमान भौतिक विज्ञान अत्यन्त विकसित होते हुए भी अनेक गम्भीर समस्याओं से ग्रस्त है। बिग बैंग मॉडल, ब्लैक होल, क्वाण्टम फिजिक्स, गुरुत्व बल, स्पेस, टाइम, बल की अवधारणा, फैलता ब्रह्माण्ड तथा मूल कण ये गम्भीर समस्यायें हैं। पता नहीं क्यों संसार भर का मीडिया भी बिग बैंग मॉडल व ब्लैक होल तथा स्टीफन हॉकिंग को इतना महत्व देता है?

भारतीय खगोलशास्त्री डा. ए.के. मित्रा ने सन् 2004 में ही ब्लैकहोल का खण्डन किया तथा मैंने भी ब्लैक होल विशेषकर बिग बैंग का खण्डन 2004 में किया। हॉकिंग साहब को पत्र भी भेजे। मित्रा साहब के अनेक लेख भी प्रकाशित हुए उन्होंने ब्लैकहोल के स्थान पर ईको मॉडल स्थापित किया परन्तु भारतीय मीडिया भी शान्त रहा। अन्त में स्टीफन हॉकिंग ने कहा ब्लैक होल नहीं होता तो भारतीय मीडिया भी बोल उठा। मैंने हॉकिंग को पत्र लिखा, उसकी कापी भारतीय मीडिया तथा अनेक देशों के वैज्ञानिकों को दी गयी परन्तु कोई प्रभाव नहीं। हाँ, इतना अवश्य है कि यूरोपियन मेडीकल सायंटिस्ट **Gergel Furjes MD, Faculty of Public Health, University of Debrecen, Hungary** ने कहीं से मेरे हॉकिंग के नाम पत्र पढ़कर कुछ सेकेण्ड में ही अपनी सहमति दर्शाते हुए पत्र लिखा। यदि ए.के. मित्रा विदेश में होते तो उन्हें कदाचित् नोबल पुरस्कार मिल गया होता परन्तु अपना तो देश इण्डिया है। मेरे कहने का तात्पर्य है कि भारत में भारतीयों का सम्मान है ही नहीं। हाँ, अब श्री मोदी जी के नेतृत्व से मित्रा जी को भी आशा है और मुझे भी पाठकगण! मैं विशुद्ध वैदिक विज्ञान की बात कर रहा हूँ, रामायण, महाभारत कालीन वैदिक विज्ञान व टैक्नोलोजी की बात कर रहा हूँ। तब मेरी बात वर्तमान परिवेश में समझ में आना अत्यन्त दुष्कर लगता है। आज रामायण व महाभारत के विज्ञान को भारत का अधिकांश प्रबुद्ध वर्ग कल्पना मान रहा है। दुर्भाग्य यह है कि कुछ कथित वैदिक विद्वान् भी इन्हें कहानियां ही मान रहे हैं। हाँ, यह बात भी सत्य है कि इन ग्रन्थों में कुछ ऐसे प्रक्षेप भी हैं, जो इन ग्रन्थों को कल्पित व दूषित सिद्ध करते हैं परन्तु हर अज्ञेय बात को प्रक्षेप बताने का भी रोग बढ़ता जा रहा है। जब तक मैं वैदिक विज्ञान के कुछ सिद्धान्तों को प्रतिपादित करके वर्तमान विज्ञान की कुछ गम्भीर समस्याओं को नहीं सुलझा दूंगा, तब तक मेरी बातों पर यह देश कभी विश्वास नहीं करेगा, फिर विदेशी तो कैसे करेंगे? इस कारण मैं आज देश वासियों को विश्वास दिला रहा हूँ कि वर्तमान विकसित भौतिक विज्ञान की उपर्युक्त समस्याओं का समाधान वैदिक विज्ञान से हो सकेगा, मुझे ऐसा ईश्वर पा से विश्वास है। वैदिक विज्ञान अनुसंधान लुप्त परम्परा को मैंने ईश पा से खोज लिया है, ऐसा मेरा विश्वास है। मैं अभी ऋग्वेद के ऐतरेय ब्राह्मण का वैज्ञानिक भाष्य कर रहा हूँ, जो सम्भवतः विश्व में प्रथम बार हो रहा है। यदि किन्हीं महानुभाव को ऐतरेय ब्राह्मण के किसी अन्य वैज्ञानिक (आधिदैविक) भाष्य की जानकारी हो तो देने की पा करें। भाष्य पूर्ण होने से पूर्व कुछ भी प्रकाशित वा उद्घाटित नहीं करूंगा। उसके पश्चात् मैं भारत सरकार विशेषकर प्रधानमंत्री जी से मिलकर बताना चाहूँगा कि भारत जगद्गुरु ऐसे वैदिक विज्ञान द्वारा मार्गदर्शित उच्च विकसित

...शेष पेज 5 पर

''आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की बैठक सम्पन्न''

दिल्ली की समस्त आर्य शिक्षण संस्थाओं में होगा अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं का आयोजन : सुरेंद्र कुमार रैली

आर्य विद्या परिषद् दिल्ली की बैठक 27 अप्रैल को महिर्ष दयानन्द पब्लिक स्कूल, आर्य समाज न्यू मोती नगर में इसी विद्यालय के चेयरमैन श्री मदन मोहन सलूजा जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी, प्रस्तोता श्री सुरेन्द्र कुमार रैलीजी, श्रीमती वीना आर्या, श्रीमती तृप्ता शर्मा, श्रीमती रुचि टंडन एवं विभिन्न आर्य विद्यालयों के चेयरमैन (प्रधान) प्रबंधक, प्रधानाचार्य/ प्रधानाचार्या एवं अध्यापिका/अध्यापक उपस्थित रहे।

बैठक की शुरुआत गायत्री मंत्र से हुई। परिषद् के पूर्व प्रधान स्व. श्री राजसिंह आर्य जी को दो मिनट का मौन रखकर याद किया गया। सभी उपस्थित जनों का परिचय कराया गया और पिछली बैठक की कार्यवाही पढ़कर सुनाई गई। सभी ने अपनी सहमति देते हुए इसकी संपुष्टि की और सत्र 2014-15 में आर्य विद्या परिषद् की विभिन्न गतिविधियों- वार्षिकोत्सव- कल, आज और कल का आयोजन, अध्यापिकाओं व विद्यार्थियों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन, विद्यालयों का निरीक्षण करवाना व सुझाव देना, अन्य विभिन्न कार्यक्रमों में विद्यालयों की प्रस्तुतियों का **(Live telecast)** सीधे प्रसारण द्वारा बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाना आदि सराहनीय कार्यों का स्वागत किया।

सत्र 2015-16 में आर्य विद्या

परिषद् द्वारा सभी आर्य विद्यालयों में होने वाली गतिविधियों पर चर्चा की गई। श्री रैली जी ने आर्य विद्यालयों में बच्चों को नैतिक शिक्षा देने, उत्तम संस्कार देने, विद्वानों और शिक्षाविदों द्वारा अध्यापिकाओं व विद्यार्थियों की कार्यशाला आयोजित करना/करवाना, बच्चों की प्रतिभा को निखारने के लिए अंतर्विद्यालयी प्रतियोगिताओं का आयोजन सभी विद्यालयों का सकारात्मक निरीक्षण होने संबन्धी कार्यों पर विस्तार से बताया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा शुरू की गई योजना- 'घर-घर यज्ञ-हर घर यज्ञ' के बारे में चर्चा हुई और सभी आर्य विद्यालय परिवारों को इस योजना से जोड़ने का निर्णय किया गया। बैठक में उपस्थित सभी विद्यालयों के अधिकारियों ने विद्यालयों में नियमित यज्ञ करवाने, सभी अध्यापिकाओं को विभिन्न अवसरों पर अपने निवास पर यज्ञ करवाने और अभिभावकों को भी इस योजना के लिए प्रेरित करने के लिए विश्वास दिलाया।

आर्य विद्या परिषद् के यशस्वी प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने यज्ञ को जीवन के लिए उतना ही आवश्यक बताया जितना किसी भी मनुष्य के लिए वायु हो सकती है। उन्होंने बड़े सरल शब्दों में सुखी व स्वस्थ जीवन के लिए यज्ञ को प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक और संयमित, व्यवस्थित जीवन एवं निरन्तर प्रगति की ओर बढ़ने की प्रेरणा देने वाला बताया।

इसके साथ ही आर्य विद्यालय परिवारों को अय कार्यक्रमों के माध्यम से जोड़ने पर चर्चा हुई। बैठक में सभी आर्य विद्यालयों की समस्त जानकारी हेतु एक स्मारिका के प्रकाशन पर भी चर्चा हुई। परिषद् द्वारा चलाए गए **Youth Exchange Programme** के अन्तर्गत इस वर्ष दशहरे की छुट्टियों में दिल्ली के विद्यालयों के भ्रमण के कार्यक्रम पर चर्चा हुई और सभी उपस्थित जनों ने परिषद् की विभिन्न गतिविधियों को सराहनीय बताया।

बैठक में संस्कृत भाषा की उपयोगिता और उसके प्रयोग पर चर्चा करते हुए श्री राजीव आर्य जी ने विद्यार्थियों को इस भाषा को अधिक से अधिक सीखने के विद्यालयों के प्रयास पर जोर देते हुए कहा कि वैज्ञानिकों द्वारा भी इसी भाषा का प्रयोग किया जाता है। बैठक में संस्कृत भाषा के पठन-पाठन को और अधिक सरल बनाकर सीखने के लिए अनुपम आर्य जी ने विभिन्न प्रोजेक्ट बताए जिनका प्रयोग विद्यालयों में स्मार्ट क्लास के माध्यम से हो सकता है।

एम.डी.एच. इन्टरनेशनल स्कूल के प्रबंधक श्री गोविन्द राम अग्रवाल जी ने आर्य विद्या परिषद के कार्यों की प्रंशसा करते हुए कहा कि परिषद् के सभी अधिकारी इन सभी कार्यों के लिए धन्यवाद के पात्र हैं। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के माध्यम से शुरू किए गये कार्यक्रमों एवं सेवाओं से निश्चित ही सभी आर्य विद्यालयों के विद्यार्थियों को लाभ मिल रहा है और सभी आर्य विद्यालयों को इस लाभ से जुड़ना चाहिए। बैठक के अध्यक्ष श्री सलूजा जी ने अपने वक्तव्य में सभी अधिकारियों व प्रधानाचार्य/प्रधानाचार्याओं को अपनी जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक रहते हुए निरन्तर आगे बढ़ते रहने के लिए प्रेरित किया। शांति पाठ के साथ बैठक समाप्त हुई। बैठक के उपरांत सभी के लिए भोजन की व्यवस्था विद्यालय की ओर से की गई।

विशेष: आर्य शिक्षण संस्थाओं में होने वाली आगामी 'चित्रकला-प्रतियोगिता' 5 मई 2015 (मंगलवार) को रघुमल आर्य कन्या सी0 सै0 स्कूल, राजा बाजार कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-01 में सम्पन्न होगी।

- संयोजिका

पृष्ठ 1 का शेष **''नेपाल आर्य समाज...**

आर्य समाज पहुंचे और आर्य समाज के अधिकारियों के साथ मिलकर क्षतिग्रस्त क्षेत्रों का दौरा किया और राहत कार्य सेवा को गति प्रदान करने हेतु देश के आर्यजनों से दान की अपील भी की भूकम्प पीड़ितों के राहत सेवा कार्य रूपी यज्ञ में प्रत्येक आर्य जन बढ़-चढ़कर सहयोग करें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेश चंद्र अग्रवाल जी ने कहा कि ऐसी आपदाएं देवाधीन हैं। इन पर मानवीय नियंत्रण असंभव है। इन समस्याओं, पीड़ाओं से उपर उठने का एक रास्ता यही है कि हम सबको यथा सामर्थ्य सहयोग करना चाहिए। क्योंकि मनुष्य ही मनुष्य का सहायक होता है। श्री अग्रवाल जी (अहमदाबाद) ने नेपाल भूकम्प पीड़ितों की सहायता हेतु भूकम्प पीड़ित राहत कोष में 51000/- रुपए का योगदान प्रदान करते है। इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए श्री विनीत अग्रवाल जी (अहमदाबाद) ने भी 51000/- रुपए भूकम्प राहत कोष में प्रदान किए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी ने आर्यजनों को आह्वान करते हुए कहा कि जहां आर्य समाज ऐसे विपद् कार्यों में बढ़-चढ़कर सहयोग एवं योगदान दे। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि जो मनुष्य एक मनुष्य की पीड़ा को समझकर उसकी सहायता करता है, वही वास्तव में सच्चा ईश्वर भक्त है। नर सेवा नारायण सेवा की उक्ति को सार्थक करते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने नेपाल भूकम्प पीड़ित राहत कोष में 100000/- रुपए की राशि प्रदान की है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी ने (दिल्ली के) समस्त आर्य समाजों को भूकम्प त्रासदी राहत सेवा यज्ञ में अपना सहयोग देकर पुण्य के भागी बने। उन्होंने कहा कि आपके द्वारा प्रदत कोष किसी असहाय का सहारा बनेगा, इसको नव जीवन प्रदान होगा। जो दानी महानुभाव अथवा संस्थाएं अपनी दान राशि नेपाल भूकम्प पीड़ित राहत कोष में देना चाहते हैं। वह निम्नलिखित बैंक खातों में जमा कराएं तथा धन राशि जमा कराने के तुरंत बाद अपनी बैंक स्लिप डाक अथवा मेल पर सभा को भेजें और श्री विजय आर्य जी से मो. 9540040339 पर संपर्क कर अपनी रसीद प्राप्त कर लेंगे।

Email-aryasabha@yahoo.com

भूकम्प राहत कोष में दान राशि जमा कराने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा खाता नम्बर 09481000000276 पंजाब एण्ड सिंध बैक - IFSC-PSIB-0020948

आचार्य बलदेव प्रधान **श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल उपप्रधान** **प्रकाश आर्य मंत्री**

पृष्ठ 4 का शेष **भारत के जगद्गुरू ...**

वर्तमान विज्ञानादि विद्याओं के आधार पर बनेगा, जिससे हम वर्तमान अत्यन्त विकसित मूलभूत भौतिक विज्ञान की गम्भीर समस्याओं का समाधान कर सकें। जिसके आधार पर वर्तमान विज्ञान के ब्रह्माण्डीय प्रेक्षण भी संशोधित किये जा सकें। सृष्टि उत्पत्ति, परमाणु व कण भौतिकी के कई रहस्य सुलझ सकें। काल-स्पेस-बल-ऊर्जा के रहस्य उद्घाटित हो सकें। मुझे विश्वास है कि ईश कृपा से अनुकूलता रही तो आगामी 3-4 वर्षों में इस कार्य की नींव रख दूंगा, फिर भारत सरकार चाहे तो उस पर महल खड़ा करने हेतु इस महत्वाकांक्षी योजना को अपना कर प्रधानमंत्री जी के भारत को जगद्गुरु बनाने तथा मानव संसाधन विकास मंत्री श्रीमती स्मृति ईरानी के वेदादि शास्त्र पढ़ने के स्वप्न को साकार कर सकें। ध्यातव्य है कि मेरे यह सब लिखने का अर्थ यह नहीं कि आधुनिक विज्ञान का अध्ययन बंद कर दिया जाये। नहीं-2 यह अध्ययन और भी उच्च स्तर पर हो और प्रतिभाशाली वैज्ञानिक ही प्रतिभाशाली वैदिक विज्ञानियों के साथ मिलकर वैदिक साहित्य का अध्ययन करें, तभी वैदिक विज्ञान प्रकाशित होगा। मेरे ऐतरेय ब्राह्मण के भाष्य को अनेक वैदिक विद्वान् समझ ही नहीं पाते हैं जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान के सेवानिवृत्त प्रोफेसर डॉ. एम. एम. बजाज जिनकी मैडी-फिजिक्स क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रिय ख्याति है, मेरे पास पधारे तो मेरे भाष्य के दो पृष्ठ खड़े-2 पढ़ कर तत्काल ही बहुत कुछ समझ गये। इस कारण मेरा मत है कि मेरे भाष्य को भौतिक विज्ञानी एवं वैज्ञानिक प्रतिभा के धनी अध्यात्मवेत्ता ही समझ पायेंगे। उस समय कोई कथित सैक्यूलरवादी वा नास्तिक कोई भी ऐसे वैदिक विज्ञान का विरोध नहीं कर सकेगा, तब हम स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा:।।

अर्थात् संसार के लोगों को चरित्र व विज्ञान की शिक्षा लेने हेतु भारतीयों के पास आना चाहिए।

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक
राजस्थान, मो. 9414182173

हीरक जयंती समारोह 3 से 7 जून 2015

आर्य समाज नांगल राया के स्थापना दिवस की 75वीं वर्षगांठ भव्य समारोह के साथ 3 से 7 जून 2015 तक आर्य समाज के प्रांगण में मनाया जाएगा। जिसमें आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वानों के उपदेश एवं मधुर भजन संगीत की प्रस्तुति आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशकों के माध्यम से की जाएगी।

मंत्री

कन्या भ्रूण हत्या, पाखंड व अश्लीलता के विरुद्ध
वेद प्रचार जन चेतना रैली का आयोजन

आर्य समाज के सन्यासियों वानप्रस्थियों एवं नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के संगठन वैदिक विरक्त मण्डल के तत्वावधान में कन्या भ्रूण हत्या, पाखण्ड, अन्ध विश्वास, नशाखोरी व अश्लीलता के विरुद्ध जन चेतना जागृत करने के लिए एक वेद प्रचार जन यात्रा रैली का आयोजन किया गया। रैली का शुभारम्भ दिनांक 13 अप्रैल 2015 को प्रात: 8 बजे वैदिक मोहन आश्रम भूपत वाला हरिद्वार ने उद्घान यज्ञ के साथ किया। रैली उत्तराखण्ड व उत्तर प्रदेश के विभिन्न नगरों से होती हुई दिनांक 22 अप्रैल को प्रात: 10 से 1 बजे तक गुरुकुल होशंगाबाद मध्य प्रदेश में समाप्त हुई।

उत्तर प्रदेश प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन- मुरादाबाद

दिनांक : 30 एवं 31 मई 2015

स्थान :- महाराजा हरिश्चन्द्र महाविद्यालय, लाजपतनगर, मुरादाबाद

उत्तर प्रदेश में आर्य समाज के कार्य को गति देने के लिए एवं भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण हेतु अच्छे संस्कारों को जागृत करने, नारी जागरण द्वारा कन्या भ्रूण हत्या समाप्त करने , नशामुक्ति हेतु यज्ञ एवं योग के प्रति आस्था पैदा करने के उद्देश्य से प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है जिसमें आप सपरिवार सादर आमंत्रित हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती के स्वप्न को साकार करने के लिए आज ही मुरादाबाद आने का निश्चित संकल्प करें। इस सम्मेलन में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, युवा सम्मेलन, नारी जागरण सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन, पर्यावरण सम्मेलन एवं वेद विज्ञान सम्मेलनों का आयोजन किया जायेगा।

नोट - आपकी समाज से कितने लोग पधार रहे हैं इसकी सूचना फोन - 0522-2286328 पर देने की कृपा करें।

ज्ञानेन्द्र आर्य, मुख्य संयोजक

06412678571 06837402162 06837078575

गौ रक्षा आन्दोलन उत्साहपूर्वक आरम्भ

18 फरवरी 2014 से गौ रक्षा आन्दोलन हरियाणा राज्य गौ संघ के तत्त्वावधान में बड़ी ही तपस्या से जन्तर-मन्तर, नई दिल्ली में गौ माता वंश साथ लेकर के धरना प्रदर्शन आदि करते हुए किया जा रहा है। नि:संदेह इसका श्रेय महात्मा गोपाल दास जी, पानीपत, हरियाणा वालों को है, किन्तु आर्य समाजी वैदिक धर्मी होने के कारण हमें भी तन-मन-धन से इस महायज्ञ में यथा सम्भव सहयोग देने का गर्व है। आप सब भी इस पुनीत कार्य में सादर आमंत्रित हैं। कृपया अधिक से अधिक संख्या में पधार कर दर्शन देवें व सहयोग देकर पुण्य के भागी बनें।

- प्रेम सिंह शर्मा, मो. 09311191391

संस्थापक - श्री राम कृष्ण गौशाला, ग्राम डाकघर दीपालपुर, जिला सोनीपत, हरियाणा।

''आर्य समाज के विभिन्न अनाथालयों ने की निराश्रित बच्चों को गोद लेने की घोषणा''

श्री वाचोनिधि आर्य 'जीवन-प्रभात' गांधी धाम तथा श्री नितिन्जय चौधरी (आर्य अनाथालय दिल्ली) ने कहा कि हाल ही में नेपाल में आए महा. विनाशकारी भूकम्प से जहां लाखों लोग प्रभावित हुए, वहीं सैकड़ों बालक भी अनाथ और बेसहारा हो गए, ऐसे निराश्रित बच्चों को हम गोद लेकर उनका पोलन-पोषण करेंगे और भोजन, आवास व शिक्षा सम्यक रूप से प्रदान करेंगे।

-नितिन्जय चौधरी

पाठक पत्र

नमस्ते,

आर्य संदेश दिनांक 06:04-2015 से 12-04-2015 का अंक मिला, पढ़कर और देखकर अच्छा लगा कि इस अंक में पढ़ने के लिए अच्छे-अच्छे विषय मिले। मेरा विनम्र सुझाव है कि पृष्ठ नंबर 3 का लेख 'अल्पसंख्यक के नाम पर आंतकवाद' को दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला और पंजाब केसरी इत्यादि में विज्ञापन के माध्यम से प्रकाशित किया जा सकता है। इस तरह इस विषय को समाचार पत्र के माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाया जा सकता है। इससे एक तो सत्य को सब तक पहुंचाया जा सकता है और आर्य समाज का भी प्रसार-प्रचार होगा। आशा है कि सुझााव आपको अच्छा लगेगा।

धन्यवाद

दिनेश कुमार

मो. 9872880807

अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया (69 शने पार्क रोड, शनेज पार्क एनएसडब्ल्यू 2747) के तत्त्वावधान में 27 से 29 नवम्बर 2015 को अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन उत्साह पूर्वक मनाया जाएगा जिसमें विश्व के विभिन्न देशों से आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा भारत एवं देश -विदेश की आर्य प्रतिनिधि सभाओं के अधिकारी गण हर्षोल्लास पूर्वक सम्मिलित होंगे जिसमें आर्य जगत के मूर्धन्य विद्वान् मुख्य विषय ''समकालीन दुनिया में वेदों का महत्त्व' पर अपने-अपने विचार विभिन्न शीर्षकों के माध्यम से प्रस्तुत करेंगे।

समारोह के मुख्य वक्ता :- 1. आचार्य सनत्कुमार जी वेदाचार्य, 2. आचार्य आशीष जी दर्शनाचार्य, 3. आचार्य डा. सतीश प्रकाश जी दर्शनाचार्य, 4. आचार्य ज्ञानेश्वर जी दर्शनाचार्य जी होंगे।

कार्यक्रम समारोह : -प्रतिदिन प्रात: 9.00 बजे से रात्रि 8.00 बजे। शुद्ध सात्विक भोजन की व्यवस्था आर्य समाज शानेज पार्क आस्ट्रेलिया की ओर से होगी।

विशेष: सभी आगंतुक महानुभाव रजिस्ट्रेशन हेतु **www.aryasamajaustralia.com.au** से डाउनलोड कर अपेक्षित कार्यवाही पूर्ण कर लेंवे।

आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन

जिला आर्य सभा, लुधियाना द्वारा विक्रमी नव सम्वत् 2072 एवं आर्य समाज स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में 5 अप्रैल 2015 को प्रात: 9.00 से 1.00 बजे एक समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का आरंभ पं. रमेश कुमार शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में वृहदयज्ञ से हुआ। जिला सभा के महामंत्री डॉ. विजय सरीन ने अपने उद्बोधन में कहा कि इस पुष्पित, पल्लवित बंसन्त ऋतु में ही महर्षि दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की और विक्रमी नव संम्वत् भी आज के दिन प्रारंभ हुआ। अन्त में भजनों का सुंदर कार्यक्रम आर्यजनों द्वारा प्रस्तुत किया गया।

महामंत्री

ध्यान योग साधना शिविर व वेद प्रचार कार्यक्रम

आर्य समाज अशोक विहार-1, दिल्ली के तत्वावधान में दिनांक 14 मई 2015 से 17 मई 2015 तक सांय 7 से 9 बजे के मध्य आर्य समाज प्रांगण में चतुर्थ ध्यान योग साधना शिविर का अयोजन किया जा रहा है साथ ही उपर्युक्त तिथियों में ही आर्य समाज का वेद प्रचार कार्यक्रम भी सम्पन्न होगा। कार्यक्रम में ब्रह्मा एवं वक्ता आ. राजू वैज्ञानिक होंगे व मधुर भजन आ. सतीश चन्द्र शास्त्री प्रस्तुत करेंगे।

-जीवन लाल आर्य, मंत्री

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर 1 जून से 14 जून 2015 तक

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय शिविर 2015 का आयोजन, गुरूकुल इन्द्रप्रथ, जिला फरीदाबाद, हरियाणा के प्रांगण में सम्पन्न होगा। आर्य वीरदल की सभी इकाइयों के संचालकों से निवेदन है कि राष्ट्रीय शिविर इस कार्यक्रम को नोट कर लेंवे तथा अधिक से अधिक संख्या में शिविरार्थियों को शिविर में भेजें।

-स्वामी देवव्रत सरस्वती
प्रधान सेनापति, सार्वदेशिक आर्य वीरदल।

चुनाव सम्पन्न

आर्य समाज अशोक विहार-1, दिल्ली का वार्षिक (वर्ष 2015-16) चुनाव दिनांक 27 अप्रैल 2015 को सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित अधिकारी चुने गये- **प्रधान -श्री राममेहर सिंह, मंत्री - श्री जीवन लाल आर्य, कोषाध्यक्ष - श्री ओम प्रकाश गुप्ता**

शोक समाचार

1. आर्य समाज मानस चौक गढ़, हापुड के प्रधान डॉ. धर्मवीर सिंह आर्य के पूज्य पिता श्री हरबेल सिंह का देहावसान हो गया, वे 92 वर्ष के थे। श्री हरबेल सिंह जी परोपकारी वैदिक परम्परा के पोषक थे।

2. आर्य समाज भैसोड़ा (बु. शहर) के प्रधान नेकपाल आर्य की पूज्य माता श्रीमती दमयन्ती आर्या का देहान्त हो गया, वे 92 वर्ष की थीं। माताजी ने सतोगुणी सेवाभावी आरोग्यवान रहकर अपनी अंतिम श्वांस ली। मरणोपरान्त शांति यज्ञ श्री प्रमोद आर्य ने कराया।

3. आर्य समाज कलीना मेरठ के प्रधान एवं ग्राम सभा कलीना के पूर्व प्रधान सरदार सिंह आर्य का लम्बी बीमारी के बाद देहावसान हो गया। श्री शोदान सिंह आर्य अंतरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र. ने श्रद्धांजलि सभा का संचालन किया।

4. आर्य समाज अमरोहा के पूर्व प्रधान श्री वीरेन्द्र सिंह आर्य की धर्मपत्नी श्रीमती सुशीला देवी का देहान्त हो गया। श्रीमती सुशीला देवी धर्मपारायण महिला थीं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारूण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें।

-सम्पादक

प्रवेश सूचना

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत

आर्ष गुरूकुल महाविद्यालय, आबूपर्वत में वि.स. 2047 (सन् 1990) को विधिवत् रूप से विद्याध्ययन-अध्यापन प्रारंभ किया गया था। इस प्रकार से वि. स. 2072 (सन् 2015) को गुरूकुल में विद्याध्ययन-अध्यापन के पच्चीस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। अत: इस वर्ष दिनांक 29, 30, 31 मई को होने वाले वार्षिक उत्सव को गुरूकुल के रजत जयंती वर्ष के रूप में मनाया जाएगा। इस अवसर पर गुरूकुल से विद्याध्ययन कर चुके सभी स्नातकों का परिचय करवाया जाएगा। भविष्य की योजना के विषय में जानकारी दी जाएगी। गुरूकुल में पंचमी कक्षा 10 से 11 वर्ष आयु के स्वस्थ एवं मेधावी छात्रों को प्रवेश दिया जाता है, समस्त शिक्षा नि:शुल्क है। **-आचार्य, मो. 09414589510**

आर्ष कन्या गुरूकुल, हजारी बाग (झारखंड)

आर्य समाज हजारी बाग द्वारा संचालित आर्ष कन्या गुरूकुल, आर्य समाज नवाबग. ंज, हजारी बाग (झारखंड) में 01 से 30 मई 2015 तक प्रवेश लिया जा रहा है। प्रवेशार्थ कन्याओं की अवस्था 9 से 12 वर्ष होनी आवश्यक है। कक्षा स्तर चौथी, पांचवी छठी। आर्षपाठ विधि के आधार पर विदुषी बनाने की तीव्र अच्छा रखने वाले माता-पिता ही अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलायें।

-आचार्य कौटिल्य, मो. 09430309525

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

योगिराज भगवान श्री कृष्ण की जन्मस्थली एवं युग प्रवर्तक महर्षि दयानंद सरस्वती की दीक्षास्थली पवित्र ब्रज भूमि मथुरा में प्रखर राष्ट्रभक्त महाराजा श्री महेंद्र प्रताप द्वारा प्रदत्त सुविस्तृत भूखंड में स्थित श्रद्धेय नारायण स्वामी जी की तपस्थली गुरूकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन में प्रवेश प्रारंभ हो चुका है। प्रवेश परीक्षा उत्तीर्ण होने के उपरांत ही विद्यार्थी को कक्षा 6 व 7 में योग्यता अनुसार प्रवेश दिया जा सकता है अथवा जिस विद्यार्थी को अन्य विषयों के साथ-साथ अष्टाध्यायी न्यूनतम 4 अध्याय कंठस्थ होगी, वह विद्यार्थी प्रवेश परीक्षा के उत्तीर्ण होने पर कक्षा 8 में भी प्रवेश पा सकता है। **-आचार्य हरिप्रकाश, मो. 09457333425**

गुरूकुल अखेराम सरदारों देवी आत्मशुद्धि आश्रम खेड़ा खुर्रमपुर रोड फर्रूखनगर

गुड़गांव, हरियाणा में प्रवेश प्रारंभ हो चुका। अपनी संतानों को योग्य संस्कारित एवं विद्वान् बनाने के लिए गुरूकुल में प्रवेश दिलाएं। अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें। **-आचार्य ईशमुनि, मो. 9991251275**

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज भीमगंजमंडी, कोटा, राजस्थान

वार्षिकोत्सव (15-16-17 मई 2015), आमंत्रित विद्वान् : वेद विदुषी आचार्या पवित्रा वेदालंकार-कन्या गुरूकुल सासनी, भजनोपदेशिका पंडिता अंजलि आर्या, करनाल, कार्यक्रम : प्रतिदिन प्रात: 8 से 10.30 बजे, यज्ञ-भजन-उपदेश, सायं : 5.30 बजे **-धीरेन्द्र गुप्ता, मंत्री**

आर्य समाज मंदिर, नाथनगर, भागलपुर (बिहार)

स्थान:- श्रीमती दयाराम पोद्दार अष्टांग आयुर्वेद महाविद्यालय प्रांगण, कर्णगढ़ **कार्यक्रम:** दिनांक 8,9 एवं 10 मई 2015 तक, **ओ३म् ध्वजारोहण**- प्रतिदिन यज्ञ **हवन**-8:30 बजे से 10 बजे/आगंतुक अतिथि का शुभ संदेश, **भजनोपदेश एवं वैदिक प्रवचन :** संध्या 5 बजे से रात्रि 10 बजे, **प्रवचनकर्ता:** श्री रामचंद्र सिंह, (नेपाल), **भजनोपदेशक :** श्रीमती विजयावती आर्या, (मुंगेर), श्री महेंद्र प्रसाद सिंह, तारापुर, ब्रह्मा:- पं0 गजेंद्र जी आर्य, खड़गपुर। **- रामदेव प्र0 साह, मंत्री**

पुरोहित की आवश्यकता

रानी बाग, नई दिल्ली, आर्य समाज (मेन बाजार)

आवश्यकता है एक सुयोग्य एवं विद्वान पुरोहित एवं आचार्य की जो कि रानी बाग आर्य समाज में पुरोहित के साथ-साथ चले रहे गुरूकुल के बालकों की भी देखभाल का दायित्व निभाए। **-जोगेंद्र खट्टर, प्रधान, मो. 9810040982**

आर्य समाज सागरपुर, नई दिल्ली

आर्य समाज सागरपुर में पुरोहित का स्थान रिक्त है। योग्य पुरोहित जो अपनी आजीविका स्वयं चलाने में समर्थ हो मिले अथवा संपर्क करें।

- अशोक गुप्ता प्रधान, 8468939339

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन (दिल्ली) में मासिक यज्ञ

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, लाहोरी गेट, दिल्ली में मासिक यज्ञ शनिवार 9 जून 2015 सायं 4.00 बजे होगा। सभी यज्ञ प्रेमी समय पर पहुंच कर यज्ञ में आहूति प्रदान कर धर्मलाभ प्राप्त करें। **-संयोजक**

आर्य वीरांगना दल राजस्थान का प्रांतीय सम्मेलन जयपुर में

आर्य वीरागंना दल राज. द्वारा 8 मई 2015 को प्रांत स्तरीय सम्मेलन अना. मिका बी-123, मालवीय नगर गोस्वामी तुलसीदास मार्ग जयपुर में आयोजित किया जा रहा है। अपराहन 3.00 बजे समारोह प्रारंभ होगा।

श्रीमती दुर्गा शर्मा
संपर्क सूत्र- 9829665231

स्थापना दिवस मनाया

आर्य समाज मंदिर शाहपुरा, जिला भीलवाड़ा, राजस्थान में आर्य समाज स्थापना दिवस एवं नवसंवत्सर 21 मार्च को समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह का प्रारंभ प्रात: वृहद्यज्ञ के साथ हुआ। पर्व की विशेष आहुतियाँ भी प्रदान की गई। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सोहनलाल शारदा, मुख्यातिथि डॉ. जितेंद्र शास्त्री तथा विशिष्ट अतिथि श्री कल्याणमल मून्दड़ा थे। **- मंत्री**

''योग साधना एवं स्वाध्याय शिविर''

आर्य केन्द्रीय सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में कार्यकर्त्ता योग साधना व सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर का आयोजन 1 जून से 7 जून 2015 तक गुरूकुल पौंधा देहरादून में किया जा रहा है। प्रस्थान : 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली से बस द्वारा 30 मई 2015 रात्रि 9:30 बजे तथा गुरूकुल पौंधा से वापसी 7 जून 2015 को सायं 4:00 बजे अनुमानित किराया 700/- रुपए प्रति सदस्य होगा। भोजन एवं आवास नि:शुल्क रहेगा। शिविर में उच्च कोटि के विद्वानों द्वारा योग साधना एवं सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय की व्यवस्था रहेगी। स्थान (सीट) सीमित हैं, इच्छुक सदस्य निम्न अधिकारियों से संपर्क करें।

1. श्री ओमप्रकाश आर्य (9540077858) 2. श्री सुखबीर सिंह आर्य (9540012175) 3. श्री एस.पी. सिंह (9540040324)

राष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए शोध पत्र आमन्त्रण

अथर्व शोध संस्थान, भिवानी, शांतिधर्मी (मासिक) जींद, गुगनराम सोसायटी व महर्षि दयानंद शिक्षा संस्थान, बोहल संयुक्त रूप से एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन करने जा रहे हैं जिसके मुख्य विषय महर्षि दयानंद सरस्वती एवं हिन्दी व आर्य समाज का नारी उत्थान में योगदान है। इस संगोष्ठी के लिए सम्मानित प्रतिभागियों से उपरोक्त विषयों पर शोध पत्र आमंत्रित हैं। शोध पत्र 2000-2500 शब्दों में शुद्ध टंकित करवा कर ई मेल ओपन फाईल में भेंजें ताकि शोध पत्रों को पुस्तक रूप देने में सुविधा हो व शोध पत्र की एक हार्ड कापी के साथ आप अपना परिचय, फोटो एक स्वयं का पिन कोड सहित पता लिखा लिफाफा व पंजीकरण शुल्क 500/- का चैक/ड्राफ्ट/आईपीओ रामफल सिंह दलाल के नाम बनवाकर भेज सकते हैं। शोध पत्र 31 अगस्त तक रजिस्टर्ड डाक/ कोरियर द्वारा निम्न पते पर भेंजे।

-डा. रामफल सिंह, निदेशक, अथर्व शोध संस्थान, आर्यन् टॉवर, रोहतक गेट, भिवानी - 127021 (हरियाणा)

आर्य वीर दल (राजस्थान) प्रशिक्षण शिविर 17 से 24 मई 2015

आर्य वीर दल राजस्थान का प्रांतीय प्रशिक्षण शिविर (17 से 24 मई 2015) सार्वदेशिक आर्य वीरदल की राजस्थान प्रांत एवं महर्षि दयानंद सरस्वती की उत्तराधिकारिणी सभा परोपकारिणी सभा अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में आवासीय योग व्यायाम प्रशिक्षण एवं चरित्र निर्माण शिविर 17 से 24 मई 2015 को ऋषि उद्यान, अजमेर में आयोजित किया जा रहा है। शिविर में 7 दिनों तक गुरूकुलीय दिनचर्या में रखकर योग, ध्यान, व्यायाम, यज्ञ, स्वास्थ्य, व्यवहार, संस्कृति, अस्त्र-शस्त्र, मार्शल आर्ट, तकनीकी, विज्ञान, वेद, आध्यात्म, जिम्नास्टिक तथा संगीत आदि अनेक प्रकार की विद्याओं का सुयोग्य शिक्षको द्वारा श्रेष्ठ प्रशिक्षण दिया जाएगा। शिविरार्थी की न्यूनतम आयु 14 वर्ष तथा स्वस्थ शरीर वाले हो।

भव देव शास्त्री, मो. 9001434484 देवेंद्र शास्त्री, मो. 9352547258

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने किया अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11 वां वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समारोह 5 अप्रैल 2015 को आर्य समाज सान्ताक्रूज के सभागार में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ 22 कुण्डों पर आहूतियां देकर किया गया। यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या सरस्वती (वाराणसी) रही। समारोह अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिंह, मुख्य अतिथि श्री वेद प्रकाश गर्ग, सम्मानित अतिथि आर्य श्रेष्ठी श्री प्रताप सिंह शूर पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली एवं मुम्बई महानगर की महापौर श्रीमती अल्का ताई केरकर आदि ने कार्यक्रम में उपस्थित होकर समारोह में की शोभा बढ़ाई। युवा वैदिक विद्वान पं. प्रभा रंजन पाठक एवं श्री योगेश कुमार आर्य मुम्बई ने भाव विभोर कर देने वाले उपदेशों एवं गीतों से उपस्थित श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर दिया।

-पं. नरेन्द्र शास्त्री मंत्री
आर्य पुरोहित सभा, मुम्बई

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 अप्रैल से रविवार 03 मई, 2015
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30 अप्रैल/01 मई, 2015
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 अप्रैल, 2015

प्रतिष्ठा में,

नेपाल भूकम्प राहत सेवा सामग्री भेजने हेतु संपर्क करें

दिल्ली एवं अन्य क्षेत्रों के सभी आर्य समाज अपने-अपने समाज में राहत सामग्री इक्कठा करें। यदि कोई आर्य समाज अथवा संस्था राहत सामग्री सीधा नेपाल भेजना चाहे तो वहां के भूकम्प राहत सेवा कार्यालय से सम्पर्क करें।

भूकम्प राहत सेवा कार्यालय में राहत सामग्री दूध पाउडर, नए कपड़े, धोती, तौलिए तथा अन्य जरूरतों के सामान भेजें।

नेपाल केन्द्रीय आर्य समाज, टंक प्रसाद मार्ग, बालेश्वर हाईट्स, काठमाण्डु (नेपाल)

सार्वदेशिक सभा राहत कार्यालय नेपाल नम्बर- 00977-9860481314

(1) श्री कमलकांत आत्रेय 00977-9841677706 (2) श्री माधव प्रसाद 00977-9841303440 (3) श्री तारानाथ मैनाली 00977-9851077613

यदि कोई आर्य समाज अथवा संस्था अपनी राहत सामग्री दिल्ली में ही भेजना चाहते हैं तो दिल्ली सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड़, कनॉट प्लेस नई दिल्ली-01 पर भेजें।

विशेष:- सभी दान-दाताओं एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि दिल्ली सभा को संपर्क करके ही सामान भेजें।

सभा कार्यालय नम्बर 011-23360150 (समय : 12.00 बजे से सायं 8.00 बजे)

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

के उत्पादों पर भारी छूट

दो के साथ एक फ्री

Buy Two Get One

आँवला कैंडी (500ग्राम)
आँवला कैंडी (1 किग्रा)
मधुमेह नाशनी (50ग्राम)
गुरुकुल चाय (200 ग्राम)
गुरुकुल चाय (100 ग्राम)
गुलकन्द (200 ग्राम)
पायोकिल (60 ग्राम, 25)
शांति सुधा (700 एम.एल.)
पंचामृत (455 एम.एल.)
आँवला रस (1 लीटर)
एलोवेरा रस (1 लीटर)
काजल (5 ग्राम)
सुरमा (1.5 ग्राम)

छूट - पहले आओ - पहले पाओ के आधार पर (केवल स्टॉक रहने तक) प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें -

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं0)
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 9540040339
Email- aryasabha@yahoo.com

पुरोहितों की आवश्यकता

दिल्ली सभा को ऐसे पुरोहितों की आवश्यकता है, जो सामान्य यज्ञ को विधि-विधान पूर्वक करा सके। यज्ञ की सार्थकता को साधारणत: यजमान परिवार को समझा सकें। शीघ्र सम्पर्क करें।

संदीप आर्य, मो. 9650183339
Email: aryasabha@yahoo.com

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक धर्मपाल आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, टैलीफैक्स : 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह